डॉ. प्रदीप कुमार राय
रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम
विषय - राजनीति शास्त्र
कक्षा - बी.ए. (प्रतिष्ठा) पार्ट - 03
पेपर - सं - 08
अध्याय - 02
दिनांक - 16.05.2020
टॉपिक - भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के कारण, या भारत में राजनीतिक चेतना के उदय के कारण (शेष भाग)

(8.) आर्थिक असंतोष - भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वारा आर्थिक हितों को कुप्रभावित किया गया। उद्योग-धंधों का नष्ट करना, व्यापार पर अधिकार जमाना कंपनी का कार्य था। परिणाम स्वरूप कृषि पर दबाव बढ़ा। अकाल ने किसानों की स्थिति को दयनीय बना दिया। इन सबके परिणाम स्वरूप भारतीयों के मन में विदेशी शासन को अंत करने का भाव विकसित होने लगा।

(9.) भारतीयों को उच्च पदों से अलग रखने की नीति - 1833 ई. के अधिनियम एवं 1858 की साम्राज्ञी की घोषणा द्वारा नौकरियों में प्रवेश की जो बात कही गई थी व्यवहारतः इसका पालन नहीं किया गया। I.C.S. की व्यवस्था से भारतीयों को उच्च पदों से अलग रखने का विशेष प्रयास किया गया। अंग्रेजी माध्यम, ब्रिटेन में परीक्षा, आयु सीमा घटाने आदि से प्रतिभाशाली शिक्षितवर्ग में असंतोष का भाव विकसित हुआ।

(10.) जाति विभेद नीति - 1857 के विद्रोह के बाद ब्रिटिश शासन द्वारा जाति विभेद की नीति बढ़ गई। जनरल नील और उसके ~~साथी~~ साथियों ने आतंक और भय को और बढ़ाया। भारतीयों के साथ कठोर दंड और ब्रिटिश अपराधियों को मामूली सजा दी जाती थी। 1878 की भारतीय कोड का

उपउप ओलजा, 1872 की घटना आदि ऐसे उदाहरण हैं जिसके चलते राष्ट्रीयता की बढ़ोतरी के पीछे कटुता की भी भावना थी।

(11) यातायात तथा संचार के साधनों का विकास – 1860-70 की अवधि में सड़क, संचार, रेल, डाक, तार यातायात के साधनों का द्रुत गति से विकास हुआ जिससे विभिन्न भागों में रहनेवाले देश के शुभचिंतकों में आपसी संपर्क स्थापना में सहूलियत होने लगी, भौगोलिक एकता को मूर्त रूप मिलने लगा तथा राष्ट्रीय आंदोलन को बल प्राप्त हुआ।

(12) विदेशी आंदोलनों का प्रभाव – इटली, जर्मनी, रूमानिया, सर्बिया में राजनीतिक आंदोलन, फ्रांस में तृतीय गणतंत्र की स्थापना और इंगलैंड में सुधार कानूनों का पारित होने जैसी घटनाओं से भारतीयों में मातृभूमि की स्वाधीनता हेतु संघर्ष के लिये प्रेरित किया और राष्ट्रवाद की धारा को स्वाभाविक रूप से प्रभावित किया।

(13) लॉर्ड लिटन की दमनात्मक नीति – लॉर्ड लिटन (1876 – 80) के शासन काल में ऐसे कार्य किये गये जिसने भारतीय राष्ट्रीयता को प्रोत्साहित किया। इनमें I.C.S में आयुसीमा घटाना, 1877 में विक्टोरिया को भारत की महारानी घोषित करने के लिये हुये व्यय, इंगलैंड को कलनिर्यात, भारत में दुर्भिक्ष की स्थिति, अफगानिस्तान पर आक्रमण में हुआ व्यय, भारतीय सेना को साइप्रस भेजना, 1878 का वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट, भारतीय शस्त्र अधिनियम, उसकी आर्थिक नीति, सूती वस्त्र उद्योग को हानि पहुंचाना आदि कार्य ने भारतीय जनता का असंतोष बहुत उग्र किये। सर विलियम वेडरबर्न के शब्दों में, लॉर्ड लिटन के शासनकाल के अंत में स्थिति विद्रोह की सीमा तक पहुंच चुकी थी।

Scanned with CamScanner

(14) इलबर्ट विधेयक संबंधी विवाद – 1880 में लॉर्ड रिपन भारत के गवर्नर जनरल बने जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में सुधार किया। न्यायिक क्षेत्र में सुधार के लिये इलबर्ट विधेयक का अंग्रेजों द्वारा विरोध से भारतीयों की आँखें खुली और इसने देश भक्ति की पुकार को मजबूती दी और भारतीयों को अखिल भारतीय संगठन की आवश्यकता महसूस की गई। ए.सी. मजूमदार के शब्दों में, 'राजनीतिक प्रगति वांछनीय है जो केवल राष्ट्रीय सभा द्वारा ही संभव है जिसका संबंध देश की एक व्यापक राजनीति से ही होना चाहिए'।

उपर्युक्त तत्वों के सामूहिक रूप ने भारतीयों में राष्ट्रवाद, भारतीयता एवं राजनीतिक चेतना के विकास में व्यापक योगदान दिया। जिससे भारत में अखिल भारतीय कांग्रेस की स्थापना इन सब हितों को प्राप्त करने के उद्देश्य से हुई। MacDonald ~~के शब्दों में~~ ने राजनीतिक चेतना एवं राष्ट्रवाद के संबंध में बताया ~~कि~~ है कि, 'It is the revival of an historical tradition, the liberation of the soul of a people.'